हिंदी साहित्य में दलित चेतना

- संपादक -
प्रा. डॉ. जिभाऊ शा. मोरे

हिंदी साहित्य में दलित चेतना

डॉ. जिभाऊ शामराव मोरे
असोसिएट प्रोफेसर तथा अध्यक्ष, स्नातकोत्तर हिंदी विभाग,
के. जे. सोमैया महाविद्यालय, कोपरगाँव,
जि. अहमदनगर, (महाराष्ट्र)

पुजा प्रकाशन, कानपुर

अनुक्रम

[illegible] कवि लक्ष्मण सुरंजे १-३

[illegible] ामोदर मोरे के काव्य में दलित चेतना

[illegible] नवनाथ सर्जेराव ४-८

[illegible] ोमप्रकाश वाल्मीकि कृत बस्स! बहुत हो चुका में दलित चेतना

३. नि[illegible] गनाथ गायकवाड ९-१२

- इंद्र बहादुर सिंह की कविताओं में दलित चेतना

४. प्रा. गणेश दयाराम शेकोकार १३-१८

- स्वातंत्र्योत्तर हिंदी उपन्यासों में चित्रित दलित जीवन की समस्याएँ

५. मनिषा चिने १९-२०

- अनामिक के दस द्वारे के पिंचरे में दलित चेतना

६. श्री. शरद कचेश्वर शिरोळे २१-२४

- उदय प्रकाश के कहानी साहित्य में दलित चेतना

७. प्रा. नानासाहेब जावळे २५-२९

- डॉ. लक्ष्मीनारायण लाला के नाटय साहित्य में दलित चेतना

८. प्रा. के. के. बच्छाव ३०-३३

- हिंदी साहित्य में दलित चेतना प्रेमचंद के उपन्यास साहित्य में दलित चेतना

९. प्रा. डॉ. सुनीता नारायणराव कावळे ३४-३८

- हिंदी आत्मकथाओं में दलित चेतना

१०. राहुल जयसिंग बहोत ३९-४१

- हिंदी कहानियों में दलित चेतना

११. डॉ. सुनिल द. चव्हाण ४२-४४

- समकालीन हिंदी कहानी में दलित चेतना

१२. डॉ. सचिन कदम ४५-४७

- हिंदी लोकगीतों में दलित चेतना

१३. प्रा. डॉ. योगेश दाणे ४८-५१

- कवि केदारनाथ अग्रवाल के शुद्र काव्यनाटक में अभिव्यक्त दलित चेतना

१४. प्रा. अनिता कुंभार्डे (सोमवंशी) ५२-५५

- हिंदी की आत्मकथा साहित्य में दलित चेतना

१५. प्रा. डॉ. अनुप सहदेव दळवी ५६-५८

- मलेश्वर के उपन्यासों में अभिव्यक्त दलित चेतना

१६. प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी ५९-६५

- हिंदी दलित उपन्यासें में सामाजिक क्रांती

१७. तुपे सरला सुर्यभान ६६-६८

- यथा प्रस्तावित उपन्यास में दलित चेतना

१६. हिंदी दलित उपन्यासों में सामाजिक क्रांती

प्रा. डॉ. व्ही. डी. सूर्यवंशी
हिंदी विभाग अध्यक्ष, कला व वाणिज्य महाविद्यालय, येवले,
जि. नासिक (महाराष्ट्र) चलभाष - ९४२१६०४६२४

मानव समाज के हित के लिए लिखी गई रचना साहित्य है । 'हितेन सह साहित्य' 'साहितस्य भाव साहित्य' मानने की परंपरा है । 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' का चित्रण साहित्य है । साहित्य के माध्यम से ही लोक कल्याण और समन्वय साधना के साथ धर्म का मार्ग प्रशस्त होता है और वह मानवता को निर्माण करते हुए समाज को दिशा देता है । वह अनुभूति और संवेदना के व्दारा विचारों को पल्लवित करके शब्द और अर्थ को प्रदान करता है । प्राचीन काल से मानव जाति कल्याण हेतु 'सर्वान्त सुखाय' के लिए साहित्य सृजन हुआ । समाज एक सामाजिक संस्था है जिसका महत्त्व व्यक्ति के विकास में रहा है । समाज की परिभाषा में व्यक्तियों की इकाई अभिप्रेत है मगर यही समाज व्यवस्था आज जाति के आधार पर विभाजित हो चुकी है । भारतीय समाज व्यवस्था पर धर्म, जाति, धर्मग्रंथ, व्यवस्था का प्रभाव है । धर्मगुरु धर्मग्रंथ समाज के पथदर्शक, बने है । वर्ण व्यवस्था के कारण शूद्र उपेक्षित रहा । ज्ञानदेनेवाले मनोरंजन करनेवाला साहित्य आज समाज जीवन का दर्पण है । स्वातंत्र्योत्तर काल में समाज जीवन में होनेवाले परिवर्तन का सशक्त अंकन आधुनिक साहित्य में हो रहा है । दलित, नारी, अविकसित, उपेक्षित, किसान, मजदूर, दरदराज अंचलों में रहनेवाले आदिवासी के संघर्षरत जीवन की कथा साहित्य है ।

भारत की इस कर्मभूमि पर कई संत, महंत, भक्त, समाज सुधारक, सेवक जन्म लेकर जिन्होंने समाज को सुधारनेका एवं क्रांति करने का प्रयत्न किया । कबीर, रैदास, तुलसीदास, नामदेव, एकनाथ, दयानंद सरस्वती, महात्मागांधी, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर, शाहुमहाराज, राजाराममोहन राय सयाजीराव गायकवाड आदि इसके उदोहरण है । दलित साहित्य वेदना और पीडा का साहित्य है, मुक्ति का साहित्य है । अपने आधिकारो और पहचाने के संघर्ष करने वालों का साहित्य है ।

दलित शब्द का अर्थ :

'दलित' शब्द की व्युत्पति 'दल' धातु से हुई जिसका अर्थ पिछडा, शोषित, रौंदा हुआ अविकसित अछूत आदि है । अर्थात जिसे दबाया गया विकसित नहीं होने दिया परंपरा व्यवस्था से उपक्षित

ISBN No. 978-93-83171-22-4

रखा, जिसका जीवन कीड़े-मकौडे जैसे घृर्णित है ऐसा मानव 'दलित' है । अस्पृश्य, दास, हरिजन, शूद्र आदिनाम भी दिए है । वर्ण व्यवस्था, घर्म व्यवस्था को नकारोवाला विद्रोही, संघर्षरत समाज 'दलित' है । केशव मेश्राम ने 'अनुसूचित जाति बौध्द, मजदूर, आदिवासी गरीब किसन, भूमिहीन को दलित माना है' ।[1] नई समाज व्यवस्था नई सभ्यता ने दलित को नया अर्थ देने का प्रयास किया है। डॉ. वानखेडे की मान्यता है 'जो श्रमजीवी है वे दलित' ।[2] ओमप्रकाश वाल्मीकि ने दलित पहचान को एक सरल और सामायीकृत परिभाषा में बाँधो का प्रयास करते है । 'दलित' शब्द का अर्थ है जिसका, दलन और दमन किया गया है, दबाया गया है, उत्पीड़ित, शोषित, सताया हुआ, गिराया हुआ, उपेक्षित, घृणित, रौंदा हुआ, मसला हुआ, वंचित आदि ।[3] स्पष्ट है - शोषित, मानव दलित है । शेडयुल्ड कास्ट, डिप्रेस्ट क्लास को भी दलित माना है । जाति व्यवस्था का एक समूह विशिष्ट वर्ग वाचक शब्द उपेक्षित जन विद्रोही मानव दलित है । कल और आज के गर्भ में के दलित का अर्थ बदल रहा है । अपनी अपनी मान्यता के अनुसार इसका स्वरुप परिवर्तित हो रहा है अर्थात मानव व्दारा मानव का शोषित रुप दलित है, उस में सभी स्तर के जन आ सकते है, न जातिभेद है न लिंग भेद न प्रदेश ।

चेतना का अर्थ :

मानव सामाजिक और संघर्षशील प्राणी है । जीवन और चेतना का संबंध रहा है । चेतना एक ऐसी प्रेरणा तथा प्रवृत्ति है, जो अन्याय, शोषण के खिलाफ उठने वाली ताकद, विद्रोही भाव है । यह अस्तित्व की रक्षा का पतीक है । चेतना का अर्थ-चैतन्य प्राणशक्ति जीवन शक्ति है ।[4] जो कुछ नहीं उसे पाने की इच्छा चेतना है । डॉ. देवेश कुमार ठाकुर ने चेतना को शक्ति मानकर व्यक्ति को जागृत रखने वाली प्रेरणा को 'चेतना' कहा है ।[5] स्पष्ट है चेतना विकास का, जागृति का केन्द्र है ।

सामाजिक परिवर्तन, सामाजिक क्रांति एवं आंदोलन में चेतना का होना अनिवार्य है । अप्रगत, पिछडे उपेक्षित आदिवासी को अपने आस्तित्व की रक्षा,स्वत्व का भाव, अपनत्व की पहचान हो रही है। अन्याय, अत्याचार, शोषण खिलाफ विद्रोह की बात चली है इतना ही

ISBN No. 978-93-83171-22-4

नही आदिवासी समाज से ऐसे व्यक्तियों का निर्माण हो रहा है, जो समाज प्रबोधन समाज पुर्ण-निर्माण में अच्छा सहयोग दे रहे है, यही दलित चेतना है ।

सामाजिक क्रांति का स्वरुप

भारतीय समाज व्यवस्था का एक अंग 'दलित' है । प्राचीन काल से दलित समाज शोषित, उपेक्षित रहा है । आज समाज सुधारकों का कार्य, डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर जी का दर्शन, शिक्षा प्रसार, दलित संघटना के कारण यह समाज सामाजिक क्रांति की ओर बढ रहा है । सामाजिक पुर्नरुत्थान, नई समाज व्यवस्था निर्माण में योग देने वाली यह क्रांति है । सामाजिक क्रांति में साहित्य का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है । हिंदी उपन्यासों में सामाजिक क्रांति के प्रचारक पात्रों का सृजन करके हिंदी उपन्यासकारों ने अपनी मान्यताएँ प्रस्तुत की है । लगता है, कलम के रखवाले साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से सामकजिक क्रांति को बल दिया है । आज का दलित साहित्य सामाजिक क्रांति का प्रेरणा स्त्रोत ही है ।

भारत देश की सामाजिक क्रांति में अंग्रेजी शासन का महत्त्वपूर्ण स्थान है । अंग्रेजी शिक्षा से नयी ज्ञान क्रांति, उसमें औद्योगिक क्रांति, जिससे वित्तीय, भौतिक क्रांतिं हो गई । मुद्रण क्रांति साम्यवादी क्रांति की नींव रही । समाज सुधारकों, दार्शनिकों ने जनक्रांति को बल दिया । मजदूर क्रांति, नारी क्रांति, धार्मिक क्रांति होती रही । परिणामतः सामाजिक क्रांति को बल मिला । सर्वहार, शोषित, अपमानित, लांछित, दलित, किसान, मजदूर, बंधुआ, नारी अपने अधिकार की रक्षा तथा माँग के लिए संघटित होने लगे- सामाजिक शोषण व्यवस्था की नींव उखाड़ने लगे । झूठी धार्मिक मान्यता, शोषण, आर्थिक तत्त्व को ध्वस्त करके नई व्यवस्था का प्रारंभ इसी क्रांति ने किया । इसका प्रभाव दलित जीवन पर भी रहा । साहित्यकारों में इस नई व्यवस्था को चित्रित करके अपना समर्थन दे दिया ।

दलित साहित्य की भूमिका :

मानव समाज में विकास लाने के लिए क्रांति की अनिवार्यता है । रुढिबध्द समाज को दिशा दिखाने का कार्य साहित्य करता है । भारतीय समाज व्यवस्था जाति, धर्म पर टिकी है । गौतम बुध्द, कबीर नानक, रहीम, रैदास, भागवत संप्रदाय के संतो-भक्तों ने इस व्यवस्था पर करारा व्यंग्य किया । सामंतीवाद साम्राज्यवाद को ध्वस्त

ISBN No. 978-93-83171-22-4

किया गया परंतु सामाजिक व्यवस्था को प्रभावित करने वाली जातिवादी व्यवस्था को नहीं। लगता है इसकी जड़ मजबूत रही है, इसलिए भारतीय समाज में एक व्यापक सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है।

दलित साहित्य सामाजिक विसंगतियों, विषमताओं को मिटाने का, बेजुबानों को जबान, घुटन से मुक्ति देने का कार्य करता है। यातना शोषण अन्याय से मुक्त समाज व्यवस्था चाहने वाला यह साहित्य है। डॉ. सोहनपाल सुमनाक्षर कहते हैं, यह साहित्य व्यक्ति की भीरु, अकर्मण्य और धर्मांध के स्थान पर जुझारु, संघर्षशील और कर्तव्यशील बनाकर उनमें स्वाभिमान, आत्मगौरव जगाने का कार्य करता है।[६] डॉ. बाबासाहेब व्दारा किया गया कार्य सामाजिक क्रांति की मिसाल है। महाड़ सत्याग्रह, कालाराम मंदिर प्रवेश, मनुस्मृति दहन, धर्मांतरण आदि के मूल में सामाजिक क्रांति का भाव है। अपने पैरों पर चलने वाला, नए मूल्यों को स्वीकराने वाला क्रांति का पथ प्रशस्त करने वाला युवा दलित साहित्य का केन्द्र है। डॉ. बाबासाहेब, म. फुले, शाहु की मान्यताओं को चित्रित करने वाला यह साहित्य सामाजिक क्रांति को बल देता है और दलित साहित्यकार इसी पथ का पथिक रहा है। साहित्य का प्रधान कार्य समाज में जागृति जगाना, नए विचारों-मूल्यों की स्थापना करना, अन्याय अत्याचार, अपराध को मिटाना आदि है। दलित साहित्य का भी यही प्राण तत्व है। इसके लिए सामाजिक क्रांति का होना जरुरी है।

प्रेमचंद के 'रंगभूमि', 'गोदान', 'कायाकल्प', निराला के 'निरुपमा','कुलीमाट', जगदीशचंद्र का धरती धन न अपना, मदन का 'मोरी की ईट', राजेंद्र अवस्थी का जंगल के फूल, जाने कितनी आँखे आनंद प्रकाश का 'आठवी', भगवती प्रसाद शुक्ल का खारे जल का गाँव मन्नू भंडारी का 'माहभोज', दिवाकर का 'आग पानी आकाश,' ओमप्रकाश का 'अछूत', सत्यप्रकाश का 'जस तस भई सवेर', नागर का 'नाच्यौ बहुत गोपाल,' श्रीलाल शुक्ल का 'रागदरबारी', राकेश वत्स का 'जंगल के आसपास', जयप्रकाश कर्दम का 'छप्पर', शिवप्रसाद का शैलूष, चंद्रमोहन का एकलव्य, आदि कई उपन्यास इसके प्रमाण है।

दलित उपन्यासों में सामाजिक क्रांति :

हिंदी दलित साहित्यकार भाग हुआ यथार्थ को वाणी देने का प्रयास करता है। स्वानुभूति को अभिव्यक्ति देने वाला यह साहित्य है। बाबासाहेब के दर्शन से प्रभावित साहित्यकार अपनी रचना एवं पात्रों के व्दारा नई समाज व्यवस्था को चित्रित करना चाहता है। परंपरागत रुप से शोषित दलित जीवन के साथ-साथ संघर्षरत, विद्रोही, क्रांतिकारी पात्रों के माध्यम से सामंतीवादी, धर्मांध जातीयवादी मनोवृत्ति ध्वस्त करता है।

ISBN No. 978-93-83171-22-4

पढ़ा-लिखा दलित, दलित नेता, राजनीतिक आरक्षण से लाभान्वित दलित, संविधान का लाभ उठाने वाला दलित चित्रित करके सामाजिक क्रांति पहल की है। दलित समाज में चेतना, जागृति, स्वत्व भाव, अधिकार की रक्षा का भाव जगाने का महत्त्वपूर्ण कार्य दलित साहित्य कर रहा है।

प्रेमचंद के 'रंगभूमि' का चमार सूरदास औद्योगीकरण का विरोध करता है, कायाकल्प का चमार युवा जमींदारों की मनमानी को नकारता है, कर्मभूमि चमारों की कथा, गोदान होरी की कहानी है। राहुल सांकृत्यायान के 'जय औधेंय' का अर्जुन जातीयता के टुकड़े करना चाहता है तो निरुपमा का चमार कुमार पढ़ा-लिखा होकर भी मोची का काम करता है। जगदीशचंद्र के धरती धन न अपना का काली संगठन के वल पर अन्याय का विरोध करके बायकॉट करता है। 'नरक कुंड में वास' का काली, किसना चमड़े के कारखानों में मजदूरों के लिए उचित मजदूरी की माँग के लिए हड़ताल करते है। 'नदी यशस्वी है' के कहार लोग छुआछूत को मिथ्या मानते, वनवासी का बडौज पंडितों की मनमानी का विरोध करके ईसाई बनकर बिंदू से विवाह करता है, अध्यापक बनता है। शैलूष की सब्बो नटों को जमीन दिलाने के लिए जमींदारों से संघर्ष करती है। 'महाभोज' में बिसू चमार की हत्या से खेली जा रही गंदी राजनीति का विरोध चमार करते हैं। छप्पर की सुख्या-रमिया अपने बेटे चंदन को पढ़ाई के लिए शहर भेजती है। जस तस भई सवेर का शिवदास आरक्षण का समर्थन करता है।

गिरिराज किशोर के यथा प्रस्थापित का बालेसर छुआछूत का विरोध करके ठाकुर लोगों की आलोचना करता है, तो परिशिष्ट का राम उजागर आय. आय. टी. संस्थान में शिक्षा प्राप्त करता है। जयप्रकाश कर्दम के छप्पर का चमार चंदन पढ़ाई करके, संगठन बनाकर दलितों के लिए स्कूल चलाता, कमल के साथ हुयी जबरी का विरोध करता है। मदन दीक्षित की मोरी की ईट में मेहतर जाति की व्यथा है। मेहतरानी का शोषण, अवैध संतान, जाति पंचायत, धर्मांतरण पर विचार किया है। अधिकार की माँग के लिए १५ दिन की हड़ताल, मेहतर संघ की स्थापना। स्वाभिमानी मंगिया की कथा सामाजिक क्रांति का एक पहिया है। डॉ. कुँवरपाल कहते है, पचास साल के बाद स्वाधीन भारत में

ISBN No. 978-93-83171-22-4

दलित मंगुआ का गंगाराम होना मंत्री व्दारा भ्रष्टाचार करना जात भूलना आदि पर भी यहाँ प्रकाश डालकर बदलती दलित संस्कृति पर सोचा है । लगता है, सामाजिक क्रांति में दलित नेताओं की वदल मनोवृत्ति अडसर बनेगी, जिसमें बाबासाहेब का सपना साकार में स लगेगा ।

दलित उपन्यासों में सामाजिक क्रांतिकारक पात्र :

दलित साहित्य तथा उपन्यासों के पात्र सामाजिक चेतना, विचारधारा के प्रमाण है अर्थ की अपेक्षा मानव प्रेम को श्रेष्ठ मान विवाह में जात नहीं इच्छा को स्वीकारना, श्रम के आधार पर मजदू मागना शिक्षा को अनिवार्य मानना, उसका प्रसार करना, अंधश्रध्दा ठुकराना आदि उनके विचार सामाजिक क्रांति के प्रमाण है । रंगभूमि सूरदास धरती धन न अपना का काली, ज्ञानो, 'खारे जल का गाँव' अरविंद, चनकी, शैलूष की सावित्री, वनवासी का विंदू-वडौज 'कगार आग' की गोमती, 'कब तक पुकारु' की सुख राम प्यारी, 'छप्पर चंदन', जंगल के आसपास की श्यामा, दिनेश, 'जस स नई सवेर' विदास, सरवन, अपनी सलीबें का ईशु, 'आग पानी आकाश' युगेश्वर, भागवत, रामसजीवन, वन के दावेदार का विरसा, 'एकलव का एकलव्य, 'जंगल के फूल' का सुलकसाए, महुआ आदि अनेक पा सामाजिक क्रांति में कार्यरत है । प्रगतिशील चेतना, सामाजिक पुर्नरुत्था के उन्नायक है । शोषण, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ विद्रोह कर वाले, संगठन बनाकर ताकत दिखानेवाले, अपना दलित्व को नकार वाले ये आंबेडकरी दर्शन के प्रतीक पात्र हैं ।

जाति पंचायत, जाति व्यवस्था, पंडित, जमींदारों की मनमानी भ्रष्ट राजनीति, दलित नेताओं की मनोवत्ति, ईसाइयों की धर्मांतरण क प्रवृत्ति, लालच दिखाकर फँसाने की प्रवृत्ति, दलितों में स्थित जातीयत उच्चनीचता का भाव, अलग पनघट, मंदिर में प्रवेश न होना, पाठशाल में अलग व्यवस्था आदि का चित्रण करके समाज व्यवस्था पर प्रका डाला है । परंतु प्रगतिशील, क्रांतिकारी पात्र इसका विरोध करके मान को केन्द्र में रखकर समाजहित, कल्याण चाहते हैं । परंपरागत समा व्यवस्था में बदलाव लाकर नई सामाजिक क्रांति की नींव रखना चाह हैं सामाजिक क्रांति को बल देने के लिए वे तैयार है ।

ISBN No. 978-93-83171-22-4

निष्कर्ष : - यहाँ स्पष्ट है हिंदी उपन्यासों में दलित जीवन के चित्रण के साथ-साथ दलित चेतना, सामाजिक चेतना एवं क्रांति का भी अंकन किया है । हिंदी उपन्यासकार, दलित साहित्यकार, प्रगतिवादी विचार, आंबेडकर दर्शन और समाजवादी तत्वों से प्रभावित है । जहाँ अन्याय, शोषण होता है वहाँ दलित साहित्यकार की निगाहें जाती हैं । स्वानुभूति या परानुभूति या परानुभूति को अभिव्यक्त करके सामाजिकता का निर्वहन करते है । जातीय व्यवस्था, समता, सामाजिक न्याय की स्थापना, धर्मांध तत्वों का पर्दाफाश, जमींदारों, सवर्णों, धार्मिक व्यक्तियों, सरकारी अफसरों की मनमानी के खिलाफ संघर्ष, शिक्षा प्रसार, दलित संगठन, राजनीति में प्रवेश, मंदिर, पनघट, पाठशाला में प्रवेश, विजातीय विवाह, उचित मजदूरी की माँग, हीन कार्य का त्याग आदि का चित्रण हुआ है । सामाजिक क्रांति तब होगी जब सभी की मानसिकता बदलेगी, समता की स्थापना होगी । इसके लिए वैचारिक परिवर्तन की आवश्यकता है। समाज का मूलाधार मानव को मानते हैं। नव समाज निर्माण होना सामाजिक क्रांति की नींव है । सामाजिक क्रांति में भी भ्रष्टाचार, भ्रष्ट राजनीति, राजनीति और धर्म का संबंध, जातीयता, सरकार की अंधी नीति, दलित नेताओं की कमजोरी, उदासीनता, एकता का अभाव, राष्ट्रीय हित की कमी आदि कई रुकावटें दिखाई देती है । मानव अधिकार, अस्मिता, स्वत्व की रक्षा के लिए सामाजिक क्रांति की आवश्यकता है । साहित्यकार रचनाएँ लिखते हैं । परंतु दलित समाज तथा सवर्णों को भी पूरे मन से सहयोग देना चाहिए । मजहब, मतलब को त्यागकर सच्ची लगन से राष्ट्रहित को सर्वप्रथम मानकर, सामाजिक क्रांति में योग देना ही राष्ट्रसेवा, राष्ट्रीय कर्म है ।

संदर्भ ग्रंथ -

१. प्रेमचंद साहित्यमें दलित चेतना - डॉ. बलवंत सहादु जाधव, पृ. २००
२. दलित साहित्यों स्वरुप एवं महत्त्व - डॉ. भरत सगरे, पृ. ८
३. दलित साहित्य की भूमिका - हरपल सिंह 'अरुप', पृ.३
४. नालंदा विशाल शब्द सागर, पृ.१२५, १२६
५. भारतीय आदिवासी समाज- श्री.ए.वाय.कोडेकर फडके प्रकाशन पृ.६
६. खारे जल का गाँव भगवती प्रसाद शुक्ल, पृ.१३६
७. दलित साहित्य वेदना और विद्रोह - शरणकुमार लिंबाले, पृ.३१
८. हिंदी कथा साहित्य में दलित विमर्श - दिलीप मेहरा, पृ.८१
९. महाभोज - मन्नु भण्डारी, पृ.९
१०. आदिवासी समाज एवं संस्कृति - डॉ. शैला चव्हाण कदम, पृ.५१
११. दलित चेतना - डॉ. रामचंद्र माली, पृ. ९,१०

ISBN No. 978-93-83171-22-4